दिन गुजरने लगे, छुट्टन ने दो-तीन बार काली बाबू से कहा-"मालिक लड़की की शादी करनी है, आपका ही सहारा है। आप सब खुद ही जानते हैं।" फिर चौथे-पांचवे दिन रात के वक्त फूलों का गजरा हाथ में लिये ऐसे घुस आया, जैसे रोज यहीं सोता हो।

"मैंने कहा काफी दिन हो गये, लाला बाबू के दर्शन कर लूं।" अपने को सम्हालते हुये छुट्टन ने कह डाला था।

थैले में खाली बोतल रखी थी। अपने पुराने भेष में, चारखाने की तहमत पहने आज वह पूरा डाक मालूम पड़ रहा था। काली बाबू आज फिर एकाएक देखकर सहम गया था। फिर भी धैर्य के बन्धन को सम्हालते हुये उसने यों ही काली वाली बोतल खुद अपने हाथ से निकाल कर उसके आगे बढ़ा दी। शराब पीने के बाद छुट्टन वहीं लेट सा गया। अन्दर की घबराहट कम हुई तो उन्होनें कहा-"अरे भई अपना हिसाब कर लेना, जो कुछ सौ सवा सौ बोतलें आई हों बतला देना, पैसे भिजवा दूंगा। और हाँ तुमने जो सबको रुपये दिये होंगे वह ले लेना। बेचारों ने जान लड़ा दी, मैं तुम्हारा यह अहसान जिन्दगी भर नहीं भूलूंगा। और सुनाओ सब बाल-बच्चे मजे में हैं।

"वो ! वो ! ! जो..... जो पु....पु.... लि... स.... वा.... ला है। मारता है। पैसे माँ... गता। पक..... ड़ मारेगा।"

"अच्छा-अच्छा घबराओ नहीं। सौ-पचास जो कहोगे दिलवा दूंगा। यार मेरे होते हुये तुम्हें पैसे के लिए तकलीफ हो, बड़े शर्म की बात है।"

"पचास रुपये लेकर चला गया : काली ने आज दरवाजे की कुंडी में जब ताला बन्द किया तब जाकर उसके दिल की धड़कन कम हुई। दिन फिर कटने लगे। जब कभी काली बाबू को उसकी याद आ जाती तो कलेजा एकबारगी फिर धड़कने लगता।

छुट्टन फिर एक दिन आया और काली से बोला -"लाला बाबू, दस हजार रुपयों की जरूरत है, लड़की की शादी करनी है। और भी सबका हिसाब करना है।" इस पर काली ने आज जरा तेवर बदलते हुये कहा, "भाई तुमने तो बिलकुल टकसाल समझ रक्खा है। अभी तक तो कहीं से एक धेला भी नहीं आया है। मैं खुद बड़ा परेशान हूं। और मैंने तुमसे कई बार कहा कि जो कुछ शराब वगैरह का बिल हो, भेज दो। मौका निकाल कर उसे भी चुकता कर दूँगा। मेरे पास इस वक्त पाँच सौ रुपये हैं, तबियत चाहे तो ले जाओ, मुझे तुम्हारा काम निकल जाये बड़ी खुशी होगी।"

"लाला बाबू-पाँच सौ रुपये की तो मुझे कफन की चादर भी अच्छी नहीं मिलेगी। नाराज न हो तो एक बात कहूं। लाला बाबू-खून पिलाया है खून, मेहनत के पैसे मांग रहा हूं"

"अमा तुम तो नाराज होने लगे, मैंने तो वैसे ही कह दिया था। तुम कभी - कभी अपनी डंडी जरा सी इधर भी घुमा देते हो। अच्छा ये ले जाओ, फिर जो कहोगे और इन्तजाम कर दूंगा। अच्छा बताओ तुम्हारे लिये क्या मंगवाऊँ। शादी के बारे में कोई काम-काज मेरे लायक हो बतलाना।

"सब ठीक करना है। अच्छा चला, खुदा हाफिज।"

इसके बाद एक दिन काली बाबू को छुट्टन सड़क के मोड़ पर मिला, बगैर सलाम किये ही आगे बढ़ गया। पान की दूकान तक जाने के बाद उसने कनखियों से देखा और सर घुमा कर सिगरेट का मुंह उस जलती हुई लौ में घुसेड़ दिया। सिगरेट जल उठा। जब तक 'बारह इंच वाला' न दिखलाओ, पैसा वसूल ही नहीं होता। क्या जमाना आ गया -लोग दूसरे के खून के चिराग जलाते फिरते हैं। ईमान-धर्म दुनिया से बिलकुल उठ ही गया। एलेक्शन से पहले काली बाबू कैसी-कैसी बातें कर रहा था, आज जैसे मालूम पड़ता है कुछ जानता ही नहीं। कमीने की औलाद, साले ने अगर अबकी से कोई बहाना बतलाया तो ये ही पार कर दूंगा। इन सालों का ये ही हशर है।

आज काली बाबू उसके इस व्यवहार से डर गया।

❖❖ ❖❖ ❖❖ ❖❖ ❖❖ ❖❖ ❖❖

रोज की तरह आज फिर दोपहर वाली धूप ने गर्मी पकड़ी। हवा ने फिर अपने को तपा कर लू बनाया, सड़कों ने फिर अपनी छाती को जला-जला कर लाल किया, मौसम बेहाल हो उठा। छुट्टन सबको लेकर उसकी कोठी पर पहुँच गया। खस की टट्टी की चरमराहट ने मालिक को जगा दिया, पांचों-छइयों कुर्सियाँ वजन से दबने लगीं। हमेशा की तरह काली बाबू ने उसे फिर गद्दी के पास बैठाया, बोतल के बजाय कोका-कोला और लस्सी लाने का हुक्म दिया। हड़बड़ाहट में दो-चार गालियां दुलारे को यूं ही बक डालीं जैसे कोई मिनिस्टर के आने से अरदली उठ खड़े होते हैं। खास नजाकत के साथ पधारने का कारण पूछा, कुछ परिचित, कुछ अपरिचित सबका परिचय पूछा।

जवाब में छुट्टन ने भी अनार को सिर्फ उधर से देखते हुये कहा-"सब मेरे स्टाफ के आदमी हैं। आज एक जगह काम था, मैंने समझा अकेले जाने से कोई फायदा नहीं है क्यों भई खिलाड़ी ! "

"जमाना बड़ा खराब आ गया है। लोगों की जबान का कोई एतबार नहीं रहा। यह नहीं सोचते कि आखिर हमारे भी बाल-बच्चे हैं। मतलब हो जाने पर कोई किसी से जैराम जी की भी करना पसन्द नहीं करता। मालिक ! काम शुरू कर दूं?"

"फिर किसी का लेना है, किसी का देना है, किसी से वायदा है, किसी से वसूल करना है।"

"क्या मतलब ?"

"मतलब कुछ नहीं लाला बाबू, जरा सी बात है-किसी का काम आ पड़ा, कर दिया। जब हिसाब करने जाता हूं, पचास टाले-वाले बताते हैं। वाकई बड़ा खराब जमाना अया गया हैं काम से पहले तो ऐसी मीठी चुपड़ी कहेंगे- जैसे सारी मुहब्बत का ठेका इन्होंने ही ले रक्खा हो। काम हो जाने के बाद चश्मे की चार आंखें भी आदमी को पहचानने के लिये बेकार हो जायेंगी। दूसरे की मेहनत से नाजायज फायदा उठाना ही आजकल के जमाने की रफ्तार हो गयी है। इसीलिये हम जैसे इन्सानों के दिलों से भी दिन पर दिन, रहा सहा मुहब्बत का जज्बा भी काफूर होता जा रहा है।

"आज मैंने हार कर यह रमपुरिया निकाला है। देखो लाला बाबू इसकी धार तेज है।" बल्ब की रोशनी में एक लपक के साथ वह उनकी गद्दी के पास जा गिरा।"

काली बाबू ने फिर एक जोर की आवाज दुलारे को लगाई - "अबे साले कहां मर गया है? अभी तक लेकर नहीं पलटा।" कनखियों से देखा - वह छइयों शहर के छटे बदमाश मालूम हो रहे थे।

लस्सी न मिली, कोका कोला पिलाया गया। फिर दराज के नीचे वाले खाने से छः बोतलें निकाली। इस पर छुट्टन ने उसी लहजे से कहा -